श्री कामेश्वर सिंह "सहायक प्रोफेसर"
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कॉलेज सासाराम
वर्ग- बी०ए० पार्ट-III प्रतिष्ठा; पत्र- VI
राजनीतिक चिन्तक - डॉ० पुखराज जैन
यूनिट न० - 24; दिनांक- 13-05-2020,

Qn- अरस्तू द्वारा प्लेटो की आलोचना का वर्णन करें।

A→ अरस्तू यद्यपि प्लेटो का शिष्य था एवं उसने प्लेटो की अनेक विचारों की आलोचना की है। यह सत्य बात है कि अरस्तू ने बहुत से विचार प्लेटो से ग्रहण किया है लेकिन जहाँ वह प्लेटो से सहमत है वहाँ वह मौन है। लेकिन जिस विचार से प्लेटो से मतांतर होता है वहाँ वह प्लेटो की स्पष्ट आलोचना करता है क्योंकि सत्य के प्रति अत्याधिक निष्ठा के कारण ही उसने अपने गुरु की आलोचना की है। अरस्तू के अनुसार "प्लेटो मुझे प्रिय अवश्य है" परंतु उससे भी अधिक प्रिय सत्य है। अरस्तू ने जिन विचारों की प्लेटो की आलोचना की वे मुख्यतः तीन है ! —

(i) राज्य की एकता का सिद्धांत।
(ii) परिवार के साम्यवाद का सिद्धांत।
(iii) संपत्ति के साम्यवाद का सिद्धांत।

(i) राज्य की एकता का खंडन ⟹ प्लेटो ने रिपब्लिक में आदर्श राज्य की एकता पर बहुत जोर दिया उसके अनुसार एकता जितनी अधिक होगी राज्य उतना मजबूत होगा। अरस्तू ने प्लेटो का इस विचार का खंडन तीन आधार पर किया है! —

प्रथम, उद्देश्य वस्तु की रक्षा करता है उसका विनाश नहीं। राज्य का भी उद्देश्य वही हो सकता है जिससे उसका अस्तित्व

कायम रह सके तक सुरक्षित है। लेकिन अरस्तू के अनुसार यदि राज्य का उद्देश्य एकता हो और एकता पर अधिक बल दिया जाए तो इससे राज्य की रक्षा न होकर उसका विनाश ही होगा।

द्वितीय, अरस्तू के अनुसार राज्य एक समुदाय है। समुदाय होने के कारण यह सिर्फ अनेक लोगों से ही नहीं बल्कि असदृश्य लोगों से बना है। उसके अनुसार यदि सभी मनुष्य सदृश्य और समान होते तो वे एक साथ मिलकर संगठित नहीं होते। अतः समस्या ऐसा तभी संभव है जब विभिन्न हो। विभिन्नता को मिलाकर एकता की स्थापना नहीं कि जा सकती। और यही पर अरस्तू प्लेटो से असहमत है।

तृतीय, अरस्तू का मत है कि राज्य का उद्देश्य एकता की स्थापना करना नहीं बल्कि अपने नागरिकों को विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। क्योंकि नागरिकों की आवश्यकताएँ विभिन्न प्रकार की होती है विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों का होना आवश्यक है। क्योंकि व्यक्ति विभिन्न रूप से कार्य कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते है और राज्य आत्मनिर्भर होता है। अगर राज्य की पूर्ण रूप से राज्य की एकता की स्थापना की

जाए तो राज्य की विभिन्नता का विनाश हो जाएगा। वह न तो आत्मनिर्भर होगा न अपने सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगा। अतः अरस्तू के अनुसार आत्मनिर्भरता और एकता परस्पर विरोधी हैं।

② परिवार को समाप्त करने की योजना ⇒

अरस्तु ने प्लेटो की नारी साम्यवाद की भी आलोचना कि है। प्लेटो ने अपनी पुस्तक रिपब्लिक में सैनिक और दार्शनिक वर्ग के हेतु परिवार का बहिष्कार किया है। उसके अनुसार परिवार राज्य की एकता के मार्ग में बाधक और स्वार्थ की जननी है। इसी के कारण स्त्रियों की प्रतिभा कुंठित हो जाती है और राज्य उनकी सेवा से वंचित हो जाता है। अतः प्लेटो सैनिक और दार्शनिक वर्गों के स्त्री - पुरुषों को विवाह न करने और परिवार न बसाने का संदेश दिया है।

अरस्तु ने प्लेटो की इस योजना की निम्न तर्कों के आधार पर आलोचना किया है।

प्रथम, परिवार मानव जाति एक प्राकृतिक और आवश्यक संस्था है। राज्य का मूल परिवार में निहित है। अरस्तू के अनुसार परिवार राज्य का विरोधी नहीं बल्कि पूरक है। अतः परिवार राज्य की एकता के मार्ग में बाधक नहीं है।

क्योंकि परिवार में ही आज्ञाकारिता, सहयोग, प्रेम, त्याग, परोपकार, संयम आदि सद्गुणों को सिखते हैं।

द्वितीय, परिवार को बहिष्कार कर राज्य की एकता की स्थापना नहीं कर सकते क्योंकि प्रेम का क्षेत्र जितना ही अधिक विस्तृत होगा उसकी प्रगाढ़ता उतनी ही कम होगी। इस अर्थ में यह कहा जा सकता है कि परिवार को हटाने से राज्य की वह एकता भी नष्ट हो जाती है जो परिवार की उपस्थिती में नहीं थी।

तृतीय, मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास के लिए भी परिवार आवश्यक है क्योंकि परिवार पारस्परिक प्रेम और शुभकामना की आधार-शिला पर आधारित है।

चतुर्थ, पत्नी बच्चे और दास परिवार में अपना समुचित विकास कर समाज के हेतु उपयोगी बनते हैं। पति-पत्नी जीवन पथ पर एक दूसरे के नैतिक साथी होते हैं और वे दोनों एक दूसरे की सहायता कर श्रेष्ठ जीवन के आदर्श को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। अपनी पुस्तक ETHICS में कहा है कि पुरुष अपने स्वभाव से एक नागरिक होने से पहले एक पती होता है। पुनः परिवार में ही बच्चों का नैतिक विकास होता है तथा अनुशासन और आज्ञाकारिता का पाठ पढ़ते हैं परिवार में रहने के कारण दासों को अपने स्वामियों से प्रेरणा मिलती है। इस प्रकार परिवार से सबको लाभ है। परिवार को बहिष्कृत करने का अर्थ है, प्यार भरे माँ-बाप का अंत करना, अनुशासित बच्चों का उन्मूलन करना। आज्ञाकारी दासों को मिटाना। एवं पति-पत्नी को अपने मूल प्रवृत्ति को संतुष्ट करने से वंचित करना। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि परिवार को मिटाने से लाभ तो कुछ नहीं होता परंतु हानियाँ बहुत होती हैं।

Scanned by CamScanner